आपकी खुशी आपके पास

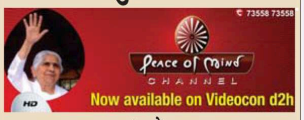

क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विज्ञापन के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता हुआ ''पीस ऑफ माइंड चैनल, आपके शहर में उपलब्ध है।

ब्रह्माकुमारीज टांसपोर्ट विंग (शिपिंग एविएशन टूरिज्म) द्वारा ' रिडिफाइनिंग हैप्पीनेस, विषय पर सेमिनार का आयोजन ज्ञानसरोवर परिसर में 26 जुलाई से 30 जुलाई 2013 तक आयोजित किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - ब्र.कु.मीरा, राष्ट्रीय संयोजिका

Email - satservicesttw@gmail.com
Mob.-9920142744, 9413384864

सूचना- ओमशान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने वाले भाइयों की आवश्यकता है। ईमेल, वेबसाइड तथा साफ्टवेयर की जानकारी रखने वाले भाई की भी आवश्यकता है। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें -
E-mail- mediabkm@gmail.com,
Mob.-8107119445

सूचना

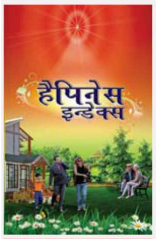

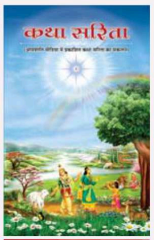

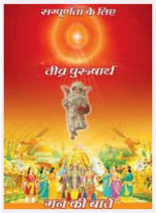

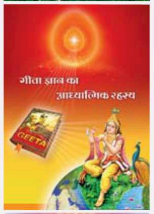

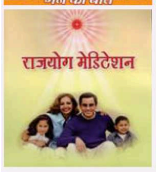

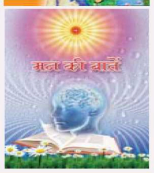

आप सभी भाई-बहनों की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन' नवीन संस्करण के साथ, भगवान कौन? की गीता का आध्यात्मिक रहस्य पुस्तक, हैप्पीनेस इंडेक्स, कथा सारिता उपलब्ध है। इसे आप ओम शांति मीडिया, शांतिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

दुष्ट-जनों का संग दुखदायी

(स्वामी चक्रपाणि)

वेदों में स्पष्ट निर्देश है कि पापलिप्त प्रवृत्तियों को धर्मनिष्ठ बनाने का प्रयास लगातार करते रहो, लेकिन उनसे ऐसे सम्बन्ध भी मत रखो जो आपकी पवित्रता नष्ट हो जाये । इस प्रसंग में हितोपदेष की एक कथा बहुत प्रसिद्ध है। एक व्यापारी उज्जयिनी तीर्थ की यात्रा पर जा रहा था। वह भगवान महाकालेश्वर के दर्शन करना चाहता था। यात्रा लम्बी थी। मार्ग में एक विशाल वट वृक्ष मिला। यात्री ने सोचा कि इस वृक्ष के नीचे विश्राम कर लिया जाय।

ग्रीष्म ऋतु अपनी प्रचण्डता पर थी। जब यात्री वृक्ष के नीचे लेटा और उसे नींद आ गयी। कुछ देर पश्चात वृक्ष के पत्तों के मध्य से गर्म धूप उसके ऊपर गिरने लगी। उस वृक्ष पर अनेक पक्षी रहते थे । एक हंस भी वहीं निवास करता था। वह अत्यंत साधु और सज्जन स्वभाव का था। उसे लगा कि यात्री की नींद न टूट जाये। इसलिये वह वृक्ष की एक शाखा पर बैठकर अपने पंख फैलाकर छाया करने लगा। जब कौए ने देखा कि हंस सज्जनता का कार्य कर रहा है तो उसने विघ्न डालने की योजना बनायी। वह सेवाभाव करते हुए हंस के पास आकर बैठ गया। हंस ने भी आदर के साथ कौए को अपने पास बैठा लिया। लेकिन कौआ हंस को कष्ट देना चाहता था। अत: उसने सोचा कि यदि मै यात्री के मुख पर बींट कर देता हूं तो वह नाराज हो जायेगा और सोचेगा कि हंस ने ही बींट की है। वह हंस को अपने तीर-बाण से मार देगा और मैं उससे पहले ही उड़ जाऊंगा।अपनी इस योजना के अनुसार कौए ने यात्री के मुख पर बींट कर दी। यात्री की आंखे खुल गयी और उसने सोचा कि हंस ने ही बीट की है। कौआ पहले ही उड़ चुका था। क्रोधित यात्री ने अपने बाण से हंस की हत्या कर दी और दूर बैठा कौआ मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। कौआ स्वयं तो अच्छे आचरण को ग्रहण कर सम्मान प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखता था लेकिन वह हंस से ईर्ष्या करता था कि यह सबके लिये आदर का पात्र क्यों हैं ?

यजुर्वेद में ऋषि प्रार्थना करते हैं कि हे संसार के उत्पादक देव! आप हमारे सारे दुर्गुणों एवं हमसे दुर्जनों को दूर रखिये तथा हमारे लिये जो कल्याणकारी गुण हों, उन्हें हमें दीजियेगा। आचार्य चाणक्य कहते हैं कि स्वयं भी अच्छे आचरण को ग्रहण करें साथ कपटी से सावधान रहते हुए उसकी कुटिल चालों को विफल करें । अथर्ववेद में कौआ जैसी प्रवृत्ति वाले लोगों को आस्तीन का सांप कहा गया है । ऋषि कहते हैं कि यहां जो पास में दूरी पर आस्तीन के सांप हैं, वे सारहीन हो जायें। मैं बिच्छू को हथोड़े से मारता हूं और पास आये सर्प को लाठी से मारता हूं। ऋषि आह्वान करते हैं कि समाज को सुरक्षा देने के लिए दुर्जन का दमन करो और उनका त्याग ककरो, इसलिए साधक प्रार्थना करता है कि हे प्रभो! शत्रु जनों का अनिष्ट चिंतन और कपट व्यवहार हमारे पास तक न आये । हे ईश्वर हमें अच्छी प्रेरणायें देकर हमारी रक्षा करें और हम दुर्जनों की कुटिल नीतियों से सदैव सावधान रहें।

भारतीय चिंतन में उन लोगों को ही राक्षस, असुर या दैत्य कहा गया है जो समाज को शान्तिमय जीवन जीने का अवसर प्रदान नहीं करते। दानवी प्रवृत्ति स्वपोषण की प्रवृत्ति है। वेद कहते हें कि विश्व को आर्य बनाओं अर्थात् श्रेष्ठ बनाओ। श्रेष्ठता तब ही आयेगी जब कुटिल और असत्य चालों से मानवता की रक्षा की जायेगी।

प्रश्न- आजकल भारत में कई लोग विभिन्न नामों ने योग सिखा रहे है। अनेक पार्टियाँ निकली हैं। कोई रामपार्टी कोई विष्णु पार्टी तो कोई शंकर पार्टी। हमें भ्रम सा होता है कि सत्य कहाँ है, हम कहां जाएं ?

उत्तर- जाँए तो आप वहीं जहां जाने की इच्छा हो। परन्तु भगवान को पाकर व सत्य ज्ञान को पाकर भटकना उचित नहीं। यह दुर्भाग्य की निशानी है। जिसे भगवान के पास सन्तुष्टी नही मिली उसे अन्यत्र कही भी नही मिलेगी। कुछ लोग भटक रहे है अपने अहं के कारण। कुछ लोग भटक रहे है अपने भटकने के संस्कारों के कारण व कुछ भटक रहें है आन्तरिक असन्तोष के कारण। आपको भी भटकने की इच्छा हो तो भटक कर देख लो। अनेक जन्मों की भक्ति व खोज के बाद तो भगवान मिले । कई लोग उसे भी छोड़ने की तैयारी में है। जिन्हें प्रभु-मिलन से सन्तोष नहीं हुआ उन्हें भला अन्यत्र क्या मिलेगा। सत्य तो वहीं है जहां पवित्रता है। केवल नाम मानव अपनी पहचान के लिए नई पार्टी बना लेने से न तो सत्य के सूर्य को ठका जा सकता और न किसी का कल्याण ही हो सकता । अनेक लोग इधर-उधर भटक कर पुन: वापिस आ गये है। अब उनमें वैसा उमंग उत्साह भी नहीं रहा। इसलिए आप भ्रमित न हों। ज्ञान योग मे दक्षता हासिल करो, सत्य का आभास हो जायेगा।

प्रश्न- मेरा चित्त चैन नहीं पा रहा है। पता नही अचानक क्या हो गया। मरी अवस्था 10 वर्ष से बहुत ही सुन्दर रही । कुछ ही दिन में जीवन में उदासी व एकाकी पन छा गया । क्या करूॅ मेरी कुछ भी समझ में नही आ रहा है। मुझे इससे जंजाल से निकलने का मार्ग चाहिए।

उत्तर -यह स्थिति अब बहुतों की हो रही है। इसका प्रमुख कारण है जन्म-जन्म के विकर्म । न जाने किसने कितने पाप किये ये। वे सब अचेतन मन में अंकित है अब उनसे अति घातक तंरगे मस्तिक में जा रहीं है। किसी पर उदासी छा रही है, किसी को अचानक अदृश्य व अकारण भय सता रहा है तो कोई अनिद्रा का शिकार हो गया है तो कोई मनोरोगी बन गया है। इसका इलाज डाक्टरों के पास बिल्कुल नहीं है। क्योंकि मन के लिए कोई भी दवाई होती नही,दवाईयाँ मस्तिक के लिए होती है। अब से ही प्रतिदिन 100 बार लिखो कि मैं एक महानत्मा हूँ। सबेरे जल्दी उठकर कुछ अच्छी क्लासे सुनो या अव्यक्त महावाक्य पठें। थोडा सा एकान्त में शिव बाबा से रूह रिहान करें। मन पसन्द गीत सुनें और यदि समय हो तो अकेले में गीत गाकर नृत्य भी कर ले । 3 दिन में आपका वित्त पुन:शान्त हो जायेगा।

मन में यदि कोई भी चिन्ता हो तो परेशान न हो। हर बात का हल आपके पास है। जीवन में हार-जीत सुख-दुख, मान-अपमान आते ही है, उन्हें हल्के में लेकर पुन: 5 स्वरूपों का सारे दिन में 16 बार अभ्यास करोव 2घण्टा प्रति दिन राजयोग का अभ्यास करो।

प्रश्न: मेरी खुशी गुम हो गई है। मुझे लोग बहुत बुरा भला कहते है। किसी का भी बुरा नही करती, फिर भी मुझे चारों ओर से बुराई ही मिलती है। मुझे सब नष्ट कर देना चाहते है, मै क्या करूँ ?

उत्तर- लोग तो आपको नष्ट कर देना चाहते है ,परन्तु इससे पहले ही आपने अपनी स्थिति से परिस्थितियाँ स्वत: ही बिगड़ जाती है।

भगवानुवाच याद करो । स्वमान से श्रेष्ठ। स्थिति बनती है व श्रेष्ठ स्थिति से परिस्थितियाँ स्वत: ही ठीक हो जाती है। स्वमान में स्वयं को ले चलो। मैं वही इष्ट देवी हूँ जिसकी मन्दिरों में पूजा हो रही है, मैं तो शिव-शक्ति हूँ। इस चिन्तन में मस्त हो जाओ । इससे आपकी स्थिति श्रेष्ठ रहेगी। जितने ध्यान से मनुष्यों के शब्द सुनती हो, उतना ही ध्यान यदि भगवान के शब्दों पर दो तो कमाल हो जाए।

सोच लो- भगवान ने कहा है कि तुम्हें सदा खुश रहना है। मुझे तो भगवान की सुननी है, मनुष्यों के बुरे वचन नहीं। इस जीवन में क्या-क्या मिला जरा गहनता से याद करो। घर बैठे भगवान मिले, ज्ञान सागर से ही सम्पूर्ण ज्ञान मिला। स्वर्ग का वर्सा जन्म सिद्ध अधिकार हो गया। भगवान से डायरेक्ट पालना मिली। परमात्म-सुख मिला, सर्व अविनाशी खजाने मिले । सोचों कहाँ ये महान प्राप्तियाँ और कहाँ मूल्यहीन बातें। अपने स्वमान को बढाओं तो आप पर बातो का असर नही होगा। परन्तु याद रहे स्वयं को व्यर्थ बातों से मुक्त रखना होगा तब सदा खुश रहेगी।

प्रश्न- मेरा प्रश्न हैं कि भगवान ने ये दु:खों की दुनिया क्यों बनाई। सुना है उसने यह दुनिया रची और खुद बैठकर खेल देखता है। दु:ख बहुत बढता जा रहा है । जिससे बात करो वहीं अपनी दु:ख भरी कहानी कहता है आखिर भगवान क्या कर रहा है। वह हमारा परमपिता है, क्या वह अपनी सन्तान को दु:खी देखकर सुख से सोता है?

उत्तर- सच तो यह है कि भगवान ने तो स्वर्ग (सत्युग) रचा था जहाँ सभी मनुष्य देवता थे। सुख से भरपूर थे। इतना सुख था कि वहाँ कि डिक्सनरी में दु:ख शब्द ही नही था। मनोविकारों से मुक्त,रोग,शोक,आदि का वहाँ नाम-निशान नही था। इसलिए वह दुनिया निर्विकारी, पूर्ण अहिंसक व देव-सभ्यता वाली स्वर्ग थी। परन्तु यह दु:खी दुनिया मनुष्य ने अपने मनोविकारों से व अपने पाप-कर्मो से स्वयं बनाई ।

आज भी कुछ लोग बहुत सुखी है। सत्य तो यह है कि सुख-दु,ख प्रभु देन नही, बल्कि मनुष्यों के कर्मो का ही फल है। पुण्य से सुख होता है व पाप दुखो का कारण है। जो मनुष्य व्यर्थ संकल्पों में ज्यादा रहता है वह, सुखी नही रहता और जो दूसरों को दु:ख देता है वह तो दु:खी रहेगा ही।

क्योंकि मनुष्य जो कुछ पा रहा है, अपने कर्मो के ही कारण। इसलिए भगवान इस विश्व के खेल को साक्षी होकर देखता है। हाँ वह उन्हें अवश्य मदद करता है जो उस पर विश्वास करते है व अपने चित्त को पवित्र रखते हैं । भगवान हमारा परमपिता है वह रहम दिल भी है, प्यार का सागर भी है इसलिए अपनी सन्तानों को दु:खी देंखकर वह सदा ही साक्षी तो नहीं रहता बल्कि उन्हें सत्य ज्ञान देने के लिए इस धरा पर अवतरित होता है। अब उसके दिव्य कर्म करने का समय चल रहा है। वह परम-पिता, परम शिक्षक बनकर सत्य ज्ञान दे रहे है, कर्मो की गह्य गति का राज भी समझा रहे है व मनुष्यों को पावन व सदा सुखी होने का मार्ग भी दिखा रहे हैं। वे ऐसा श्रेष्ठ राजयोग सिखा रहे है जिससे वे विकर्म व मनोविकार नष्ट हो जाते है जिनके कारण मनुष्य दु:खी हुआ है।

अनेक लोग इस राजयोग के माध्यम से सुखी हो गये है, उनकी दुखों की कहानी समाप्त हो गई है। आप सभी को कह सकती हो कि कुछ ही वर्षो में ये पाप व पापियों की दुनिया नष्ट होगी और धरा पर देव युग आ जाऐंगा । उससे पूर्व परमात्म-मिलन से सर्व दुखों का अन्त किया जा सकता है।